

खेसारी

वानस्पतिक नाम: लेथाइरस सेटाइवस

कुल: लेग्यूमिनेसी

खेसारी शरद ऋतु में उगाई जाने वाली एकवर्षीय दलहनी फसल है, जिसकी दाल तथा फलियाँ खाने योग्य होती हैं। भारत में यह खाद्य एवं चारे की एक लघु फसल है। इसको अधिक गर्मी की आवश्यकता होती है, साथ ही साथ यह ठंड प्रतिरोधी भी होती है। खेसारी आर्द्र परिस्थितियों में अच्छा प्रदर्शन करती है एवं सूखे और उच्च तापमान के लिए प्रतिरोधी भी होती है। इसके दाने पशु आहार के लिए दिए जाते हैं। इसे एकल फसल अथवा अंतर-फसल और मिश्रित-फसल प्रणाली में जई, सरसों, अलसी या जौ के साथ उगाया जाता है। रिले या उतेरा प्रणाली जो की भारत के धान आधारित कृषि क्षेत्रों में सबसे प्रचलित कार्य प्रणाली है, में किसान अपनी फसल की कटाई से 15-20 दिनों

पहले धान की खड़ी फसल में खेसारी के बीज का छिड़काव करते हैं। खेसारी एक फलीदार फसल होने के कारण वायुमंडलीय नाइट्रोजन को भी स्थिर करती है, तथा मिट्टी में कार्बन और कार्बनिक पदार्थ में सुधार भी करती है। इस प्रकार खेसारी सामूहिक रूप से मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार कर टिकाऊ उत्पादन प्रणाली हेतु आधार भी प्रदान करती है। खेसारी के हरे चारे से हे बनाया जाता है, जिसे बाद में पशुओं को खिलाया जाता है जब हरे चारे की उपलब्धता नहीं होती है।

जलवायु एवं भूमि

इसे बलुई दोमट या चिकनी दोमट मिट्टी में उगाया जाता है। इसके बेहतर विकास के लिए इष्टतम पी. एच. 6.5 से 7.0 मानी जाता है। जहाँ औसत तापमान 10 से 25 डिग्री सेल्सियस होता है और औसत वर्षा 400-650 मिमी. प्रति वर्ष होती है वहाँ खेसारी की वृद्धि अच्छी होती है।



खेत की तैयारी

सामान्य रूप से दो से तीन बार अच्छी प्रकार से जुताई कर खेत को तैयार कर लेना चाहिए, जिससे खेत की मिट्टी भुरभुरी बन जाये और चारे की अधिक उपज प्राप्त हो सके।

किस्में

निर्मल किस्म चारे के लिए देश के पूर्वी प्रदेशों में काफी प्रचलित है।

बुवाई का समय, बीज दर एवं बुवाई का तरीका

इसकी बुवाई का सही समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर है। उतेरा प्रणाली में खेसारी की बुवाई धान की फसल की कटाई से 15-20 दिनों पहले ही कर दी जाती है। बुवाई के समय कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 10 सेंटीमीटर रखना चाहिए। एक हेक्टेयर चारा उत्पादन में 50 किलोग्राम बीज की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन उतेरा प्रणाली में सामान्य से 25 प्रतिशत



ज्यादा बीज दर रखने की सलाह दी जाती है। बीज जनित रोगों से बचाने के लिए बीज को बुआई के एक दिन पहले थीरम, कैप्टान या कार्बेन्डाजिम से उपचारित कर लेना चाहिए, जिससे बढ़िया अंकुरण हो सके और अधिक उपज प्राप्त हो सके।

फसल प्रणाली

कुछ महत्वपूर्ण खेसारी आधारित फसल प्रणालियाँ निम्नलिखित हैं –

ज्वार – खेसारी+सरसों

ज्वार – जई+खेसारी

धान – खेसारी

पोषक तत्व प्रबंधन

खेसारी में नाइट्रोजन स्थिरीकरण की क्षमता होती है, इसलिए यह कम उपजाऊ भूमि तथा मिश्रित फसल प्रणालियों के लिए एक महत्वपूर्ण फसल है। अच्छे उत्पादन के लिए खेत की अंतिम जुताई के समय प्रति हेक्टेयर नत्रजन: फास्फोरस: पोटैश का प्रयोग 20: 50: 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से करना चाहिए। गुणवत्तायुक्त गोबर की खाद / हरी खाद का प्रयोग (5 टन/हेक्टेयर) जैविक घटक के रूप में किया जाना चाहिए।

जल प्रबंधन

इसमें सामान्य तौर पर सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है, लेकिन खेत में नमी की कमी हो, तो 60 से 70 दिनों बाद एक सिंचाई कर देना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन

प्रारंभ में एक या दो बार निराई-गुड़ाई करने से खरपतवार निकल जाते हैं और पौधों की बढ़ोत्तरी अच्छी होती है। इसके बाद पौधों की तीव्र वृद्धि होती है जो खरपतवारों को दोबारा पनपने नहीं देते हैं।

रोग एवं कीट प्रबंधन

इसमें रोग या कीट गंभीर नुकसान नहीं करते हैं, हालाँकि जरूरत पड़ने पर उपयुक्त रोगनाशी अथवा कीटनाशी का छिड़काव करना चाहिए। मृदुरोमिल आसिता के लिए कार्बेन्डाजिम कवकनाशी से बीजोपचार करनी चाहिए।

कटाई-प्रबन्धन एवं उपज

अच्छी गुणवत्ता वाले चारे के लिए फसल को 50 प्रतिशत फूल आने पर (बुआई के 65-70 दिन बाद) काटा जाना चाहिए। उन्नत तकनीक का प्रयोग कर, खेसारी से 20-25 टन प्रति हेक्टेयर हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।



प्रकाशक:

डॉ. अमरेश चन्द्रा

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान

ग्वालियर रोड, निकट पहूज बाँध, झाँसी-284003 (उत्तर प्रदेश)

0510-2730666

@ icarigfri Jhansi

0510-2730833

igfri.jhansi.56

director.igfri@icar.gov.in

IGFRI Youtube Channel

https://igfri.icar.gov.in

Kisan Call Centre 0510-2730241

आई.जी.एफ.आर.आई./एस.सी.एस.पी./2023/फोल्डर/15



अनुसूचित जाति उप परियोजनांतर्गत

खेसारी



संकलनकर्ता:

गौरेंद्र गुप्ता, पुरुषोत्तम शर्मा, साधना पाण्डेय,
सुनील कुमार, अमित कुमार पाटील,
बिश्व भास्कर चौधरी, दीपक उपाध्याय,
बृजेश कुमार मेहता, राजेश कुमार सिंघल,
महेश एच.एस., मनजंगौड़ा एस.एस., मुकेश चौधरी,
अविनाश चंद्र, सचेन्द्र त्रिपाठी,
प्रतीक श्रीवास्तव एवं रोहित वर्मा

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
ग्वालियर रोड, झाँसी-284003 (उ.प्र.)